REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2023

जवाहरलाल नेहरू की भूमिका आधुनिक भारत में

डॉ. पिं की
सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान , हिं दू गर्ल्स कॉलेज, जगाधरी.

सारांश:

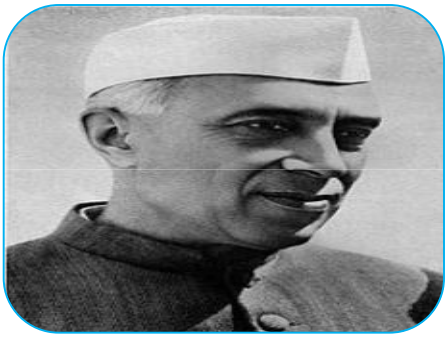

"नेहरू, विश्व राजनेता के रूप में विश्व और स्वतंत्र भारत के निर्माता व स्वतंत्रता सेनानी के रूप में हमारे देश पर अमिट प्रभाव छोड़ गए। वे मानव पीड़ा के प्रति संवेदनशील, प्रकृति की भव्यता और सौंदर्य से प्रभावित, अकेले पहाड़ों में और लोगों के बीच दोनों ही स्थानों पर सहज, मानव गरिमा के उल्लंघन के खिलाफ क्रोध से भरे, लेकिन मानवीय कमजोरियों के प्रति सहनशील थे। एक दार्शनिक जो कर्मशील जीवन जीने के लिए बाध्य थे, एक विश्व नागरिक जिनका मुख्य उद्देश्य अपने राष्ट्र का निर्माण करना था, एक सृजनात्मक लेखक जिन्हें अपने परिपक्व जीवन का बड़ा हिस्सा शासन और प्रशासन में बिताना पड़ा, नेहरू मूल रूप से एक अकेले व्यक्ति थे। उनका सबसे बड़ा सुकून पहाड़, बच्चे या लेखन थे।

उनकी लेखनी उनके संवेदनशील मन और उदार हृदय को प्रकट करती है। उनके न्याय के प्रति जुनून और देश प्रेम ने उनके विचारों को ऐसा रंग और खुशबू दी जिसे उन्होंने अंग्रेज़ी गद्य में बुना। चरम वामपंथी उनकी आलोचना करते हैं कि वे समाजवादी नहीं थे, जबकि चरम दक्षिणपंथी कहते हैं कि वे आध्यात्मिक दृष्टिकोण से प्रेरित नहीं थे।"

नेहरू ने भारत के निर्माण में अपनी सेवाओं के माध्यम से उन्हें हमारे महानतम राष्ट्र निर्माता, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद और लोकतंत्र के संस्थापक के रूप में प्रतिष्ठित किया। यदि उनमें विश्वास की दृढ़ता और उच्च उद्देश्य की भावना नहीं होती, तो वे इतने स्थायी रूप से निर्माण नहीं कर पाते। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में ऐतिहासिक चेतना का समावेश किया और राष्ट्रीय सुरक्षा तथा अंतर्राष्ट्रीय स्थिति की परस्पर निर्भरता को स्थापित किया।

नेहरू ने भारत की सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं पर स्थायी प्रभाव डाला और उन्हें संसदीय लोकतंत्र की नींव तक पहुँचाया। उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया और औद्योगिक क्रांति के लिए सतत कार्य किया।

जवाहरलाल नेहरू ने अपने जीवन को अपने लोगों की स्वतंत्रता के लिए समर्पित किया। वे स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी के प्रमुख सहयोगियों में से एक थे। स्वतंत्रता के बाद उन्होंने सत्रह वर्षों तक भारत के प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया।

नेहरू आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में याद किए जाएंगे। उन्होंने भारत में लोकतांत्रिक भावना का संचार किया और इसे एकता के ढाँचे से सशक्त किया। उन्होंने धर्मनिरपेक्षता की भावना को प्रेरित किया और आर्थिक लक्ष्यों को निर्धारित किया ताकि लोग गरीबी से मुक्ति पा सकें। अंतर्राष्ट्रीय मामलों में, उन्होंने भारत को एक गुटनिरपेक्ष देश के रूप में प्रस्तुत किया।

जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर, 1889 को इलाहाबाद में एक शिक्षित, समृद्ध कश्मीरी ब्राह्मण पिता, मोतीलाल नेहरू, और एक अशिक्षित व परंपरागत विचारों वाली माता, स्वरूप रानी के घर हुआ। उनका पालन-पोषण एक भव्य घर, आनंद भवन में हुआ। 15 वर्ष की आयु तक नेहरू की शिक्षा ब्रिटिश शिक्षकों द्वारा घर पर ही हुई। इसके साथ ही उन्होंने एक ब्राह्मण शिक्षक से हिंदी और संस्कृत का भी अध्ययन किया।

1905 में, उनके पिता उन्हें इंग्लैंड ले गए और उन्हें हारो स्कूल में दाखिला दिलाया, जो एक प्रमुख अंग्रेजी पब्लिक स्कूल था। 1907 में, नेहरू ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कॉलेज में प्रवेश लिया। कैम्ब्रिज में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्होंने लंदन में कानून की पढ़ाई की और 1912 में बार-एट-लॉ की परीक्षा उत्तीर्ण की।

1912 में नेहरू भारत लौटे और इलाहाबाद में वकालत शुरू की। लेकिन कानूनी पेशा उन्हें लंबे समय तक बांध नहीं सका। वे तिलक और एनी बेसेंट द्वारा शुरू किए गए होमरूल आंदोलन की ओर आकर्षित हुए। 1912 में वे बार में बुलाए गए और सात से अधिक वर्ष इंग्लैंड में बिताने के बाद भारत लौटे।

यह कहा जा सकता है कि नेहरू उस समय 'शायद एक भारतीय से अधिक अंग्रेज' थे। उस समय भारत का राजनीतिक परिदृश्य ठंडा और निष्क्रिय था।

जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद, जवाहरलाल नेहरू महात्मा गांधी के प्रभाव में आ गए और उन्होंने अपने पिता के साथ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए। उन्होंने असहयोग आंदोलन के दौरान उत्तर प्रदेश के किसानों के साथ संपर्क स्थापित किया और भारतीय किसानों की गरीबी को करीब से समझा।

कांग्रेस पहले से ही असहयोग के मार्ग पर थी, और इन परिस्थितियों में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी का स्वाभाविक प्रतिक्रिया इन आदेशों का उल्लंघन करना था। इसने नेहरू के भीतर भारत के शोषित और वंचित वर्गों के प्रति गहरी सहानुभूति उत्पन्न की, जिसने आगे चलकर उन्हें समाजवादी संरचना के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया।

यह विचार 1926-27 में यूरोप यात्रा के दौरान और अधिक दृढ़ हुआ। ब्रुसेल्स सम्मेलन में भाग लेने के दौरान, नेहरू ने कई उदारवादियों और बुद्धिजीवियों से मुलाकात की, जिन्होंने समाजवाद की ओर उनके विचारों को प्रभावित किया। यही कारण है कि 1928 में लिखे गए उनके कार्य *सोवियत रूस* में उन्होंने रूस में स्थापित समाजवादी संरचना की प्रशंसा की।

यूरोप से लौटने के बाद, नेहरू ने राजनीति में अपनी सक्रिय भूमिका फिर से शुरू की और कांग्रेस के महासचिव बने। 1929 में, उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। 1929 में महात्मा गांधी ने नेहरू के बारे में कहा:

"अपने साहस, दृढ़ निश्चय और धैर्य के कारण उन्होंने देश के युवाओं की कल्पना को मोहित कर लिया है। उनमें एक योद्धा की गति और जोश के साथ-साथ एक राजनेता की समझदारी भी है। वे क्रिस्टल की तरह शुद्ध हैं और संदेह से परे सत्यवादी हैं। वे एक ऐसे योद्धा हैं जो निडर और दोषरहित हैं। देश उनके हाथों में सुरक्षित है।"

नेहरू ने अपने ऐतिहासिक अध्यक्षीय भाषण में पहली बार भारत की ब्रिटिश शासन से 'पूर्ण स्वतंत्रता' की मांग की। उन्होंने सभी प्रकार के भय और पूर्वाग्रहों का विरोध किया और लोगों से इस उद्देश्य के लिए आगे आने का आह्वान किया।

नेहरू के शब्दों में: "हममें से कोई यह नहीं कह सकता कि हम क्या हासिल कर सकते हैं और कब हासिल कर सकते हैं। लेकिन सफलता अक्सर उन लोगों के पास आती है जो साहस करते हैं और कार्य करते हैं; यह शायद ही कभी उन लोगों के पास जाती है जो परिणामों से डरते हैं।"

नेहरू ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। 1937 में जब भारत में आम चुनाव हुए, तो उन्होंने देशभर में तेज़ी से दौरा किया और कांग्रेस का संदेश हर जगह पहुँचाया। चुनावों में कांग्रेस की सफलता में नेहरू के प्रयासों का महत्वपूर्ण योगदान था।

1939 में जब यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ, तो कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार के संबंध तेजी से खराब हो गए। उस समय नेहरू का मानना था कि यदि ब्रिटिश युद्ध के अंत में भारत की स्वतंत्रता का ठोस वादा करें, तो भारत को पूरी तरह से मित्र राष्ट्रों का समर्थन करना चाहिए। लेकिन ब्रिटिश सरकार ऐसा वादा करने के लिए तैयार नहीं थी और इस विवाद को हल करने के लिए उसने क्रिप्स मिशन भेजा। कांग्रेस ने क्रिप्स मिशन के प्रस्ताव को उसकी कुछ कमजोरियों के कारण खारिज कर दिया। इसके बाद महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसे 8 अगस्त 1942 को नेहरू ने आगे बढ़ाया। 9 अगस्त को उन्हें कांग्रेस कार्य समिति (CWC) के अन्य सदस्यों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया और वे 1945 में युद्ध के अंत तक जेल में रहे।

1945-49 के दौरान नेहरू ने ब्रिटिश सरकार के साथ वार्ताओं में प्रमुख भूमिका निभाई। वे शिमला सम्मेलन, कैबिनेट मिशन, और 3 जून योजना में अपनी पार्टी के मुख्य वार्ताकार थे। सितंबर 1946 में, नेहरू अंतरिम सरकार के प्रमुख और गवर्नर-जनरल की कार्यकारी परिषद के उपाध्यक्ष बने। यह कहा जाता है कि वावेल को वापस बुलाने के लिए नेहरू जिम्मेदार थे।

भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के अंतिम चरण में, देश साम्प्रदायिक हिंसा से हिल गया। इस कठिन समय में, नेहरू ने साम्प्रदायिक प्रचार का विरोध करते हुए और स्वतंत्रता संग्राम के मूलभूत मूल्यों की रक्षा करते हुए एक चट्टान की तरह खड़े रहे। इन कठिन वर्षों के दौरान उन्होंने साम्प्रदायिकता के खिलाफ लगातार अभियान चलाया।

भारत को 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिली और नेहरू स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री बने। प्रधानमंत्री के रूप में नेहरू को अनेक कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ा, जो आंशिक रूप से ब्रिटिश शासन के हटने और आंशिक रूप से देश के विभाजन के कारण उत्पन्न हुई थीं। विभाजन के बाद देशभर में सांप्रदायिक दंगे हुए, जिनमें अभूतपूर्व हिंसा देखने को मिली। विभाजन के तुरंत बाद लगभग 90 लाख हिंदू शरणार्थी पाकिस्तान से भारत आए और 40 लाख से अधिक मुसलमान पाकिस्तान चले गए। इन शरणार्थियों के पुनर्वास को उनकी सरकार ने आपातकालीन आधार पर संभाला और उनके नेतृत्व में इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा किया गया।

नेहरू का भारत के लिए सबसे सकारात्मक योगदान यह था कि उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत में धर्मनिरपेक्षता पर आधारित लोकतंत्र होना चाहिए। उन्होंने संसदीय प्रणाली को बढ़ावा दिया, इसे सफल बनाया और अपने समय के अधिकांश भारतीय राजनेताओं को इसे सफल बनाने के लिए प्रेरित किया। उनके कार्यकाल में तीन आम चुनाव सुचारू और निष्पक्ष रूप से संपन्न हुए। इस प्रकार, नेहरू ने हमारे लोकतंत्र को संजोया और इसे मजबूत किया।

नेहरू का मानना था कि भारत औद्योगिकीकरण के बिना प्रगति नहीं कर सकता, और इसे योजनाबद्ध तरीके से किया जा सकता है। इसके लिए उन्होंने योजना आयोग की स्थापना की और स्वयं इसके अध्यक्ष बने। उनके कार्यकाल में तीन पंचवर्षीय योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू किया गया। इन योजनाओं का उद्देश्य जीवन स्तर को आधुनिकता और औद्योगिकीकरण के माध्यम से सुधारना था। उन्होंने इसे "समाजवादी संरचना" की दिशा में बढ़ने की प्रक्रिया कहा।

इन योजनाओं में पूंजी निर्माण के लिए निवेश, विशेष रूप से भारी उद्योग और इसके सहायक क्षेत्रों में, मुख्य जोर दिया गया। पूंजी का बड़ा हिस्सा जलविद्युत परियोजनाओं, स्टील प्लांट, फैक्ट्रियों आदि पर लगाया गया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई।

कुल मिलाकर, नेहरू के प्रयास सफल रहे और उन्होंने आधुनिकता और तेज आर्थिक विकास की नींव रखी। समाज को अधिक प्रगतिशील और आधुनिक बनाने के अपने कार्यक्रम के तहत, नेहरू ने भ्रष्टाचार और अन्याय को जड़ से खत्म करने का प्रयास किया। 1955 के अछूत अधिनियम (*Untouchability Act*) ने संविधान में निहित उन प्रावधानों को लागू करने के लिए दंड की व्यवस्था की, जो अछूत प्रथा को गैरकानूनी घोषित करते थे।

1956 में विधवाओं को पारिवारिक संपत्ति में विरासत का अधिकार दिया गया। बहुविवाह पर प्रतिबंध लगाया गया। गरीबी और सामाजिक पिछड़ेपन के खिलाफ उन्होंने जो कदम उठाए, उससे सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव आया।

नेहरू भारत की विदेश नीति के वास्तुकार थे। उन्होंने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई। उन्होंने शक्ति गुटों से दूर रहने की कोशिश की और किसी भी गुट का अनुसरण करने से इंकार किया। वह किसी भी विवाद या मतभेद के मामले में स्वतंत्र दृष्टिकोण अपनाने के पक्षधर थे। अगर संभव होता, तो वह मदद करने और मध्यस्थता करने के लिए तैयार रहते।

1949 में अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय में बोलते हुए, उन्होंने भारत की विदेश नीति के उद्देश्य को इन शब्दों में स्पष्ट किया:

"भारत की विदेश नीति के मुख्य उद्देश्य हैं: शांति की प्राप्ति, किसी भी प्रमुख शक्ति या शक्तियों के समूह के साथ संरेखण के माध्यम से नहीं, बल्कि प्रत्येक विवादास्पद या विवादित मुद्दे के लिए स्वतंत्र दृष्टिकोण अपनाकर; उपनिवेशित देशों की मुक्ति, स्वतंत्रता का संरक्षण, राष्ट्रीय और व्यक्तिगत दोनों प्रकार की स्वतंत्रता; जातीय भेदभाव की समाप्ति; और गरीबी, रोग और अज्ञानता की समाप्ति, जो दुनिया की अधिकांश आबादी को प्रभावित करती हैं।"

नेहरू की विदेश नीति की आलोचना की गई, लेकिन उन्हें आलोचना नीति के लिए कम, और उस तरीके के लिए अधिक मिली, जिसमें उन्होंने न्याय के लिए दोहरे मापदंड अपनाए, जो पश्चिम की तुलना में कम्युनिस्ट गुट की ओर अधिक झुका हुआ था। विदेश नीति के क्षेत्र में उनका सबसे बड़ा निराशाजनक अनुभव चीन के साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व स्थापित करने में विफलता थी। यह सही कहा गया है कि "नेहरू उस दिन मरे जब चीनी हमारे सीमा पार कर गए।"

नेहरू ने चीन के साथ मित्रता में अत्यधिक विश्वास रखा, जो एक गलती साबित हुई। चीन द्वारा आक्रमण के कारण नेहरू की छवि को गहरी चोट लगी, लेकिन उन्होंने अपनी मृत्यु तक भारतीय जनता का प्रेम और स्नेह बनाए रखा।

निष्कर्ष के रूप में, नेहरू एक महान राष्ट्रीय नेता थे जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह एक महान राष्ट्र निर्माता थे, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद और लोकतंत्र के संस्थापक थे। उन्होंने भारतीय समाज और विकास की प्रक्रिया पर गहरा प्रभाव डाला और इसे एक क्रांति के शिखर तक पहुँचाया। उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया और औद्योगिक क्रांति के लिए निरंतर कार्य किया।

नेहरू, जो आधुनिक भारत के वास्तुकार थे, को उनकी जयंती वर्ष के अवसर पर सबसे बड़ा श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके मार्ग का अनुसरण करें और उनके आदर्शों और सपनों को समर्पण और निष्ठा के साथ साकार करें।

संदर्भ:

1. M. Chalapathi Rau, *Gandhi And Nehru*, Allied Publishers, Bombay, 1967, पृ. 45
2. Hans Raj Madnpotra, *Nehru Rediscovered*, Laxmi Printing Press, Delhi, 1993, पृ. 11
3. Ram Gopal, *Trials of Jawaharlal Nehru*, Saraswati Press, Allahabad, 1992, पृ. 4
4. Kanwar Lal, *Jawaharlal Nehru Promise and Performance*, Kayenkay Agencies, Darya Ganj, Delhi-6, 1977, पृ. 61
5. M.O. Mathai, *Reminiscences of the Nehru Age*, Vikas Publishing House Pvt. Ltd, New Delhi, 1978, पृ. 213
6. V. R. Krishna Iyer, *Nehru and Menon*, Konak Publishers Pvt Ltd, Vikas Marg Delhi, 1993, पृ. 67